Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 03, March- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

साहित्य और समाज का अन्तर सम्बन्ध

आनन्द सिंह
शोधार्थी राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काशीपुर नैनीताल।

: भूमिका :

साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना साहित्य का लक्ष्य रहा है। सामाजिक परिवर्तन में साहित्य जितनी अहम भूमिका निभाता है, उतना अन्य कोई माध्यम नहीं। मानव विकास के बाधक तत्वों को निकालकर उसके विरूद्ध संघर्ष करना और दूसरों को संघर्षशील बनाना साहित्यकार का दायित्व है। ऐसे ही दायित्वों का निर्वहन करने वालों में हैं कथाकार बल्लभ डोभाल। बल्लभ डोभाल मूलतः कथाकार हैं। उनका प्रारंभिक जीवन गढ़वाल की सुरम्य, सुन्दर, हरी–भरी घाटियों से घिरा हुआ बहुऋषि (बौरिख गांव) में बीता है। बल्लभ डोभाल साहित्य की दुनियां में अपनी
यायावरी व मस्ती के लिए भी जाने जाते हैं।

बल्लभ डोभाल ने साहित्य की सभी विधाओ को अपनी लेखनी से सिंचित किया है और साहित्य की सेवा में अपने जीवन को समर्पित किया है। वे एक ऐसे क्रान्तिद्रष्टा और यथार्थवादी जगत से सम्बन्ध रखने वाले कथाकार हैं, जिनके साहित्य में निरन्तर मानव मन की पीड़ा छटपटाती रहती है। अंचल विशेष में व्याप्त कुरीतिया और मानवीय आत्मा उसके मानस पटल को एक नई प्रेरणा प्रदान करती है। कथाकार ने उनको नई अर्थवता प्रदान करके अपने कथा साहित्य का अभिन्न अंग
बनाया। मानवीय वेदनाओं के प्रस्तुतीरिण का इनका अपना एक अलग ही तेवर है, जो सदैव यह मानते हैं जो साहित्य में सजीवता यथार्थवादी धरातल से जुड़कर ही प्रदान की जाती है।

कथाकार बल्लभ डोभाल के अब तक दो काव्य संग्रह एक खंडकाव्य, दस कहानी संग्रह, सात उपन्यास, तीन संस्मरण, दो नाटक तथा
धर्म आध्यात्म, दर्शन चिंतन आदि विषयक रचनाएं साहित्य में प्रकाशित हो चुकी हैं। 89 वर्ष की अवस्था में शरीर भले ही वृद्ध हो चला है, लेकिन सृजन को लेकर उनकी उमंगें अभी भी कम नहीं हुई हैं। आज भी वे निरन्तर अध्ययन के साथ–साथ लिखते रहते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पांच अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में उत्तराखण्ड राज्य एवं पौड़ी गढ़वाल राज्य का पौराणिक, एतिहासिक, भौगोलिक एवं साहित्यिक परिचय प्रस्तुत किया गया है। हिमालय की गोद में बसा हुआ यह पौड़ी गढ़वाल जनपद अनादि काल से प्रेरणाओं का श्रोत रहा है। इसकी प्राकृतिक सुषमा से आकर्षित होकर प्रत्येक वर्ष हजारों पर्यटक आते रहते हैं। कथाकार इसी जनपद का निवासी है, इसलिए इनके जीवन की पृष्ठभूमि यहां की प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों से प्रभावित हुई होगी।

द्वितीय अध्याय में कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। कथा साहित्य में समकालीन साहित्यकारों, युवा कथाकारों और साठोत्तरी कथाकारों की क्या भूमिका रही है ? इसका भी मूल्यांकन किया गया है, क्योंकि स्वतन्त्रता के पूर्व–पश्चात के समाज में अनेकों प्रकार के बदलाव देखने को मिलते हैं। कथाकार तत्कालीन परिस्थितियों को

अपने साहित्य का अंग किस प्रकार बनाया है तथा उसे किस स्तर तक सफलता प्राप्त हुई है, इसका विवेचन प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

द्वितीय अध्याय में ही डोभाल जी के जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है, क्योंकि किसी भी कृतिकार की सही परख उसके व्यक्तित्व के आधार पर ही की जाती है। रचनाकार किसी भी प्रभाव को अपनी संवेदना के निजी स्तर पर ग्रहण करता है, उसका विश्लेषण करता है, मूल्यांकन करता है। फिर अपने अनुभव, अपनी कल्पना, अपने सन्दर्भ, देश–वेश–परिवेश, अध्ययन–मनन–चिन्तन के आधार पर ही उस 'निजी सत्य' को समस्टिगत सत्य के रूप में रूपान्तरित करता है। अगर व्यक्ति और कृति के बीच एक बड़ा अन्तराल उत्पन्न हो जाए तो वह कृति ईमानदार रचना धर्मिता से परे हो जायेगी।

तृतीय अध्याय में इनके कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनके कथा–साहित्य में करनी और कथनी में कोई अन्तराल नहीं मिलता है। इनके व्यक्तित्व की परख इनकी रचनाओं के आधार पर की गई है।

चतुर्थ अध्याय में इनकी कहानियों में यथार्थवादी जीवन को चित्रित किया गया है। इनके कथा साहित्य पर पर्वतीय ग्रामीण अंचल में व्याप्त समस्याओं तथा नगरीय सभ्यता का कितना प्रभाव पड़ा है, इसका पृथक–पृथक विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय में इनके उपन्यासों में यथार्थ वादी जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। अन्त में उपसंहार में पूरे लघु शोध प्रबन्ध का सारांश प्रस्तुत किया गया है।

: आभार :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष

रूप से अनेक विद्वानों ने मुझे अपना अमूल्य सहयोग दिया है। सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशिका डॉ0 पुनीता कुशवाह, राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर का आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मुझे शोध उपाधि हेतु पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम के तृतीय प्रश्न–पत्र लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत करने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

उन्ही की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से ही मैं अपना शोधकार्य पूरा कर पाया हूं। उन्होंने मुझे विषय की पुष्ट जानकारी प्रदान की और शोध–प्रबन्ध को पूर्ण करने में पूर्ण मनोयोग से मेरी सहायता की।

महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 सुभाष चन्द्र कुशवाह मात्र मेरे गुरूदेव ही नहीं, बल्कि मेरे शुभचिन्तक और संरक्षक भी हैं। उनके सौहार्दपूर्ण एवं गम्भीर व्यक्तित्व ने ही मुझे इस काबिल बनाया है। उन्होंने मेरे प्रति असीम प्यार एवं वात्सल्य दिखाया है। मैं ईश्वर से उनकी मंगलमय जीवन की प्रार्थना करता हू। उन्होंने सही अर्थ में मेरा अनन्त उपकार किया है, जिसके लिए शब्दों में कृतज्ञता अर्पित करना सम्भव नहीं है। प्रिय गुरूवर मैं आपके सामने सिर नवाता हूं और मेरी प्रार्थना है कि आगे भी मुझे जीवन में सही रास्ता दिखाने की कृपा करेंगे।

मैं डॉ0 कीर्ति पन्त, प्राचार्या चन्द्रावती तिवारी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर का आभारी हूं।

उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझाव और सलाहों से मेरी काफी मदद की है और इस कार्य के प्रति मुझे निरन्तर उत्साहित करती रही हैं। मेरी शंकाओं को उचित समाधान देने के लिए वे हमेशा प्रस्तुत रही हैं। उनकी कृपा के लिए मैं तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

इस प्रबन्ध कार्य में मेरी माता श्रीमती कृष्णादेवी एवं पिता श्री जयवीर सिंह ने शारीरिक एवं आर्थिक सहयोग देकर सहयोग करते रहे हैं। मैं उनके प्रति हृदय से आभार ज्ञापित करता हूं।

मैं कुमाऊं विश्वविद्यालय के शोधार्थियों बड़े भाई अरविन्द मौर्य (शोध छात्र हिन्दी) एवं बड़ी बहन कु0 ऋतु (शोध छात्रा संस्कृत) के प्रति आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मुझे इस कार्य में अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

मैं अपनी सहयोगी शोधार्थी कु0 दीक्षा मेहरा का भी हृदय की गहराईयों से आभार ज्ञापित करता हूं, जिन्होंने निरन्तर मेरे मन की दुविधाओं को दूर करने का सफल प्रयास किया है और निरन्तर मेरा हौंसला बढ़ाती रही हैं।

मैं माननीय बृजेश नौटियाल जी का भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने टंकण कार्य के द्वारा मेरे कार्य को शोध प्रबन्ध का आकार दिया है।

अब मैं अपने लघु शोध प्रबन्ध को साहित्य के अध्येयताओं के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा है मेरी अल्पज्ञता के कारण लघु शोध प्रबन्ध की त्रुटियां समस्त साहित्य के अध्येयताओं के